



॥ श्री भहावीराय नमः ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ नमो नाणारस ॥

Shree Greater Bombay Vardhman Sthanakvasi Jain Mahasangh-Mumbai

*Conducted***MATUSHREE MANIBEN MANSI BHIMSHI CHHADVA -DHARMIK SHIKSHAN BOARD – MUMBAI**

542, Jagannath Shankar Sheth Road, Chira Bazar, 3rd Floor, Above Dashshrimali office, Mumbai – 400 002.
Tel.: 22018629 Website : jaineducationboard.org E-mail : jainshikhshanboard@gmail.com

६ जान्युआरी २०१९ – महिलामंडळ प्रश्न पेपर – गुण – १०० समय : ९ से १२

श्रेणी – २

प्रश्न – १

(६०)

- (क) नीचेना पाठनी पूर्ति करो (कोईपण सात)
(१) भंते तुव्येहिं.....ज्ञान दर्शन .
(२) जो मे उस्मुतो .
(३) निसीहियाओ भे! किलामो .
(४) कायसा न समायरियवा .
(५) खातरखणी लेवाना पच्चक्खाण .
(६) ओदणविहिं मुहवासविहिं .
(७) पाढियारु विहरिस्सामि .
(८) दंसण वा वि वावन्न .

(२४)

(ख) नीचेन शब्दना गुजराती अर्थ लखो.

(८)

१. आयाहिणं . ५. आइच्चेसु अहियं .
२. लोसिया . ६. जाव नियमं .
३. अविराहिओ . ७. मल्लाबाह .
४. कित्तझं . ८. आइगराणं .

(ग) नीचेना शब्दनुं मागधी लखो.

(८)

- (१) सचित पाणी
(२) ज्ञानवंत अथवा सुप्रशस्त
(३) शुभध्यानमां चित्तनी ऐकाग्रता करीने
(४) अने श्री अजितनाथ स्वामीने
(५) इंद्रादी थी विशेष रीते पुजाएला
(६) लोकमां ज्ञाननो प्रकाश करनारा
(७) स्थान पदने पामेला
(८) अप्रतिहत कोईपण पदार्थ थी हणाय नही .

(घ) सामायिकना ३ २ दोषमाथी लखो. तथा कयो दोष लागे ते लखो.

(५)

- (१) मननो बीजो दोष
(२) सूत्रना पाठने दूँका करीने बोलवा
(३) वचननो बीजो दोष

- (४) कायानो आठमो दोष
 (५) अंगने मरोडे, प्रमादमां समय वितावे

(च) नीचेना प्रश्नोना जवाब लखो. (१०)

- (१) नमस्कारमंत्र ना पांच पद कया कया सूत्रमां छे?
 (२) आगार कोने कहे छे? अने ते केटला छे? (संख्या लखो)
 (३) तीर्थकरो कोई उपर प्रसन्न थाय छे?
 (४) करण कोने कहे छे? अने ते केटला छे?
 (५) पहेलुं नमोत्थुणं सिध्धने शा माटे करवामां आवे छे?
 (६) श्रावकने केटली कोटिअ सामायिकना पच्चक्खाण होय?
 (७) कार्योत्सर्ग अटले शुं?
 (८) तीर्थकरोने शेनी उपमा आपवामां आवी छे?
 (९) जीव विराधना केटला प्रकारे थाय छे?
 (१०) प्रायश्चित अटले शुं?

(छ) खाली जग्या पूरो (५)

- (१) अटले कायाथी पंचाग नमस्कार करवा.
 (२) जैन साधुनी सामायिक ने कहेवाय छे.
 (३) योग्यताने प्राप्त थयेला पूज्य स्थान ने कहेवाय छे.
 (४) आत्मानी विशेष श्रेष्ठताने माटे करवामां आवती क्रियाने कहेवाय छे.
 (५) जेनाथी समभाव नी प्राप्ती थाय तेने कहे छे.
 (६) शकेन्द्र आदि इन्द्रो जिनेश्वर देव नी स्तुति करे तेने कहे छे.
 (७) कर्मलूपी शत्रुने हणनारने कहेवाय छे.
 (८) सामायिकना दोष टाळीने सामायिक करवी.
 (९) चारेबाजु थी पीडा उपजावी होय.
 (१०) अखिक लोकमां सौथी उत्तम श्रेष्ठ छे.

प्रश्न – २

(२०)

नीचेना प्रश्नोना जवाब लखो. (१४)

- (१) मननी ओकाग्रता समजाओ?
 (२) अभिगम अटले शुं?
 (३) दररोज जमता पहेला कई भावना भाववी जोईए?
 (४) जे कायम ना टके तेना पर शुं शुं ना करबु?
 (५) बधाने मारा मानवाथी तेमना माटे हुं शुं करु छु?
 (६) ज्ञानवृद्धिना केटला बोल छे? १ला बोल लखो?
 (७) केवुं तप करवाथी ज्ञान वधे छे?
 (८) आत्मामां केवा केवा स्पर्श नथी ?
 (९) कोण कोण आत्माने जोइ शके छे?
 (१०) मोक्षमां आत्माने शुं कहेवाय?
 (११) आत्मानो स्वभाव केवो नथी?

प्रश्न – ३ जोड़का जोड़ो

(६)

(१) महावीर	-	तप
(२) मुलायम	-	द्रेष
(३) शालिभद्र	-	विनय
(४) आनंद श्रावक	-	मृत्यु
(५) राग	-	अचेत
(६) पुणिया श्रावक	-	त्याग
(७) जन्म	-	बार ब्रतो
(८) नंदीषेण मुनि	-	श्रधावान
(९) धन्ना अणगार	-	सामायिक
(१०) गौतमस्वामी	-	सेवा
(११) सचेत	-	खरबचडो
(१२) अमरसुमार	-	कष्ट सहन

प्रश्न-४ वातनि आधारे प्रश्नोना जवाब लखो.

(१०)

- (१) बाळ भगवान पार्श्वनाथ ने जन्मथी केटला ज्ञान हता ? क्या क्या ?
- (२) गामने पादरे कमठ नामनो तापस धूणी घखावीने केवी रीते बेठो हतो ? तेनुं वर्णन करो?
- (३) मेघमाळी देव ने कोनाथी भय लाग्यो? तेथी तेणे शुं कर्यु?
- (४) नंदीषेण मुनि बाळक हता त्यारे दुःखने कारणे गळे फांसो खावा जाय छे त्यारे मुनिराज अे दुःखी बाळकने शुं समजावे छे?
- (५) नंदीषेण मुनि दीक्षा लईने मुनि बन्या पछी तेमणे पोतानो धर्म समजीने शुं कर्यु?
- (६) नंदीषेण मुनि साधु साथे गाम बहार आवीने बीजा साधुने नमस्कार कर्या त्यारे बीजा साधु अे गुस्सामां तेमने शुं शुं कह्युं?
- (७) धनावह श्रेष्ठी बजारमां वेचावा आवेली वसुमतीने खरीदी लई घरे आवीने मूळा शेठाणीने शुं कहे छे?
- (८) मूळा शेठाणी अे खोटी चिंतामां फसाईने चंदनबाला साथे शुं कर्यु?
- (९) मूळा शेठाणीने पोताना कृत्य पर पस्तावो थतां चंदनबालानी क्षमा मांगी त्यारे चंदनबाला अे तेमने शुं कह्युं?
- (१०) भगवान महावीरने केवळज्ञान प्राप्त थयुं ते खबर पडतां चंदनबाला अे शु कर्यु?

प्रश्न – ५ काव्यनी पूर्ति करो

(१०)

- (१) मारा जीवननी मारा प्राण छे.
- (२) संतोओ समजाव्या आप्या उपदेशो.
- (३) देह मळ्यो छे. तो द्वार तमारे
- (४) आचार्य देवो बगीचे रमनार
- (५) हे ! परमात्मा अमे गळावाना

..... जय जिनेन्द्र